

5. रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत-

प्रश्न 1. छात्रों को ध्यान से कार्य करना चाहिए।

उत्तरम्:

छात्रान् ध्यानेन कार्यं कर्तव्यम्/कुर्मुः।

प्रश्न 2. वृक्ष पर पक्षी चहचहाते हैं।

उत्तरम्:

वृक्षे खगाः कूजन्ति।

प्रश्न 3. हम सब मिलकर गाएँगे।

उत्तरम्:

वयम् मिलित्वा गास्यामः।

प्रश्न 4. खिलाड़ी फुटबॉल से खेल रहे हैं।

उत्तरम्:

क्रीडकाः पादकन्दुकेन खेलन्ति क्रीडन्ति।

प्रश्न 5. अध्यापक ने कहा-“सदाचार का पालन करो।

उत्तरम्:

अध्यापकः अकथयत्-सदाचारं पालय।

प्रश्न 6. कृषक गाँव की ओर गए।

उत्तरम्:

कृषकः ग्रामम् प्रति अगच्छत्

प्रश्न 7. तुम दोनो खीर खाओ।

उत्तरम्:

युवाम् क्षीरं अखादतम्।



प्रश्न 8. विद्यालय के दोनो ओर वृक्ष हैं।

उत्तरम्:

विद्यालय अभितः वृक्षाणि/वृक्षाः सन्ति।

प्रश्न 9. माता बालक को दूध देती हैं।

उत्तरम्:

अम्बा बालकाय दुग्धं दाच्छति।

प्रश्न 10. हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए।

उत्तरम्:

वयम् स्वास्थ्यस्य नियमानि पालनीया।

प्रश्न 11. कल राघव कहाँ था?

उत्तरम्:

ह्यः राघवः कुत्र आसीत्?

प्रश्न 12. मेरे पिता भोजन पकाते हैं।

उत्तरम्:

मम जनकः भोजन पचति।

प्रश्न 13. मेरे पास आकर बैठो।

उत्तरम्:

मम समीपे आगत्य उपविश।

प्रश्न 14. उन सबको दीवाली उत्सव अच्छा लगता है।

उत्तरम्:

तान् दीपोत्सवः रोचन्ते।

प्रश्न 15. ईश्वर को नमस्कार।

उत्तरम्:

ईश्वराय नमः।

प्रश्न 16. घर के बाहर कौन है?

उत्तरम्:

गृहात् बहिः कः अस्ति?

प्रश्न 17. भवन के ऊपर कौए बैठे हैं।

उत्तरम्:

भवनस्य उपरि काकाः उपविशन्ति।

प्रश्न 18. मैंने ऐसा नहीं कहाँ।

उत्तरम्:

अहम् एतत् न अकथयम्।

प्रश्न 19. कक्षा में कितने छात्र हैं?

उत्तरम्:

कथायाम् कति छात्राः सन्ति?

प्रश्न 20. तुम बाज़ार से दही लाओ।

उत्तरम्:

त्वम् आपणात् दधिं आनय।

2. प्रत्ययाधारिता वाक्य-संरचना

गुरु सेवमानेन छात्रेण या विद्या अर्जिता सा पूर्णजीवने तस्य सहायिका भूतवती।

जीवने ज्ञानमेव सर्वथा प्राप्तव्यम् यतः ज्ञानं विना न कोऽपि पूजनीयः।

अत्र स्थूलाक्षरपदानि प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।

वाक्येषु प्रत्यय-प्रयोगार्थम् एते बिन्दवः ध्यातव्याः।

* शतृ-प्रत्ययस्य प्रयोगः परस्मैपदिधातुभिः सह भवति। शानच् प्रत्ययस्य प्रयोगः आत्मनेपदिधातुभिः सह भवति। आभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः विशेषणरूपेण भवति।

* क्त-क्तवतु-प्रत्यययोः प्रयोगः भूतकालार्थे क्रियते। क्त-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भाववाच्ये च भवति। क्तवतु-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्तृवाच्ये एव भवति।

* तव्यत्-अनीयर्-प्रत्यययोः प्रयोगः विधिलिङ्लकारस्य अर्थे भवति। एताभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः क्रियारूपेण विशेषणरूपेण च भवति।
• भवन्तः एतेषां प्रत्ययानां विशिष्ट-अध्ययनम् अग्रिमेषु अध्यायेषु करिष्यन्ति।

एतानि वाक्यानि पठत-

1.	मित्र की सहायता करनी चाहिए।	मित्रस्य सहायता कर्तव्या।	<i>A friend should be helped.</i>
2.	उसने क्या कहा?	सः किम् उक्तवान्?	<i>What did he say?</i>
3.	मैंने उसे धन दिया।	मया तस्मै धनं दत्तम्।	<i>I gave him money.</i>
4.	कार्य के करते हुए ही सब साध लेते हैं।	कार्यं कुर्वन् एव सर्वं साधयामः।	<i>Everything is achieved by doing practice.</i>
5.	यह चलचित्र भूलने योग्य नहीं है।	इदं चलचित्रम् अविस्मरणीयम् न अस्ति।	<i>This movie is unforgettable.</i>
6.	बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णता को पाता है।	वर्धमानः चन्द्रः पूर्णतां याति।	<i>The rising moon attains completion.</i>

3. एतेषां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत-

प्रश्न 1. उसने पत्र लिखा।

उत्तरम्:

सः पत्रम् अलिखत्।

प्रश्न 2. खाते हुए नहीं बोलना चाहिए।

उत्तरम्:

खादन् न वदितव्यम्।

प्रश्न 3. उस कन्या ने पुस्तक पढ़ी।

उत्तरम्:

सा कन्या पुस्तक अपठत्।

प्रश्न 4. तुम्हें भी पुस्तक पढ़नी चाहिए।

उत्तरम्:

त्वम् अपि पुस्तकम् पठितव्यम्।

प्रश्न 5. वह फल लेकर घर आई।

उत्तरम्:

सा फलं नीत्वा गृहं आगच्छत्।

प्रश्न 6. तुमने ऐसा नहीं सोचा।

उत्तरम्:

त्वम् एतत् न अचिन्त्यः।

प्रश्न 7. पुस्तक पाता हुआ छात्र प्रसन्न होता है।

उत्तरम्:

पुस्तकं प्राप्य छात्रः प्रसन्नं भवति।

प्रश्न 8. जाते हुए बालक को देखो।

उत्तरम्:

गच्छन् बालकं पश्य।

प्रश्न 9. शिमला नगर देखने योग्य है।

उत्तरम्:

शिमला नगरः दर्शनीयः अस्ति।

प्रश्न 10. खाने योग्य भोजन ही खाना चाहिए।

उत्तरम्:

खादनीयः भोजनं एवं खादितव्यम्।

